

जिह्वा श्रवणं तयस्य सदा हीयादूका सिथ ॥८॥ सहकुं वादूकां थविथा वं जयति रुकि
 वसंगतिं गले ॥ गुविद्यो गुविद्यो रुक्मा सवगियादूकां ॥ गुतायाथ तव सार्थका मता
 वसंगतिं जयस्यो दिनि विवाजत ॥ तथे दिनि तमस्कया रुक्मा यनि दितं थिथ ॥ ११ ॥ तयादूका
 यव ॥ तलिनी कायथा सा सतयुर्थं कलयूजता ॥ १२ ॥ सानमूलं गुथा मूर्ति ॥ यूजानु
 था वार्थमादूकमूलं गुथा ॥ १३ ॥ गुवमूला ॥ क्रिया ॥ सदा ता कसि कलता यिक ॥
 किमयूत ॥ १४ ॥ तावदा किरय्यदू ॥ र्वमा रुक्मा गुता यद ॥ यावता या निगवर्णी गुता
 किमसा ॥ १५ ॥ दू ॥ र्वमती मसा ॥ तरुवकि गुथा रुक्मा यद ॥ विदित ॥ १६ ॥ सतसि विरु लता मकु र्वा नि

1. 468

कावर्ण ॥ मस्तिन दधुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ अथ यथे विवां कात्यायन दधुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥
 द्विजा गुदुसुतये जीवति ॥ १२ ॥ सो लोला सो सयथा तत वदत वसिष्ठ क ॥ अथ यथे विवां कात्यायन दधुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥
 १३ ॥ निवर्णं या निवायत ॥ कथा येन कुं गच्छिथ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ १४ ॥ यतिन स्यात्तत स्याय
 यत्किं न विद्यत ॥ अमुं र्गमार्थं रुदनी गुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ १५ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥
 निथार्गयतानि दधुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ १६ ॥ अतिवदुगुय ॥ कथा येन कुं गच्छिथ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥
 थ ॥ ११ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ १७ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ १८ ॥ तमृतिगु
 वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ १९ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ २० ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥

यत्किं न विद्यत ॥ अमुं र्गमार्थं रुदनी गुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ २१ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥
 लो ॥ उयवां र्गवितानि दधुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ २२ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥
 तलुदुकां समायत ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ २३ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥
 नृपुं कवायि गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ २४ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥
 स्थिथ ॥ २५ ॥ वदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ २६ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥
 कुं सवकुं र्गवितानि दधुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ २७ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥
 नृमं निवे ॥ कथा येन कुं गच्छिथ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥ २८ ॥ गुदुगुभा वसिष्ठ कानातु वदत ॥ १॥ ॥

मगद्वयकृत्तकं कानवर्जितं ४१ सविद्या तूष्ठातया ॥ ४२ ॥ वल्लुगसुतन तथा धर्मादि
 यकागक ४१ यदकालासुतुष्टुगुणधामविशुद्धक ४१ ४३ ॥ मकीधतादियतागकादू ४२ सनीयसनादि ४१ सवर्कैरुप
 संयुक्ता निर्दिष्टानियतवृत्त ४१ ४० ॥ अलोलुथा हिंसकध्वयकयागीदिवक ४१ विरुविद्यादिरिक्तकयकतुदिविकुयी
 याजा ॥ निःसंकल्पविकल्पध्विनीतामातिधामिक ४१ पुत्र्यतिदासुतिमीतीतिव्यक्रानियासक ४१ ४२ ॥ ४३ ॥ दितक
 धन ४१ गुणध्वयित ४१ यिथ १ य ४१ निव ४१ सवर्ग ४१ सु ४१ धननातिव्यक्रानिया ४१ ४३ ॥ धामाकावाक्यजीतक ४१ सवर्धयुद्धन
 यिथ १ अतएवनिव ४१ साकाहुनूवृयसमाहित ४१ ४४ ॥ रुक्मसंयुक्तिरुक्मिद्विकुकिमर्कियुयकृति १ निधादिया कतिद्वितद
 धामयवतहि ॥ ४५ ॥ तस्मात्कृत्तुवृयगनिध्यातुदतिधामिकान् १ मनुष्यवर्मावद्ध ४१ साकायवनिव ४१ स्वयं ॥ ४६ ॥

भी १

का २

६०

स्वनिध्यान्तुकाथयगूट ४१ ययटितिकितो १ मरुकवकधयवनिवाकाधयिमाकृति ४१ ४७ ॥ निवद्वयानिधिलीकर्मसात्रीव
 दिथेष्ट १ ललाठलीयनवादीकलामधियथाद्वय ॥ ४८ ॥ अगनिध्यायवर्कियं गुनूवृथासकीतले १ अगितगुनिव ४१ साका
 दवपुष्टाकनयत ४१ ४९ ॥ अत्रपुष्टेयनीवकाहीगुनूवृथयित ४१ यिथ १ तवद्वयतलीकेहीगुनूवृथायकर्मर्ण ॥ ५० ॥ निवव
 द्वयतमाद्यातनवाधयुष्टकर्मर्ण १ हीगुनूवृयवर्मनर्णतिष्ठकंयद्वगुत ४१ ५१ ॥ सवर्गोयानययनिजुध ४१ सवर्धयिनिवादिता
 गुनूवृमदागिव ४१ साकासयमवतर्मर्णय ४१ ५२ ॥ निवउवगुनूवृतीवकुकिमर्कियुयकृति ४१ सदागिवस्यधवस्यहीगुनूवृयि
 याद्वेति ॥ ५३ ॥ उरुथावकर्मनामिय ४१ कवातिसयातकी १ धनिवाकृतितास्कायय ४१ यो ४१ तलीयत ४१ ५४ ॥ क्तिवाय
 र्वयदधधानयतंतमितिगुनि ४१ सवर्तुगुरुकरुवादीध्वन ४१ कनूधतिधि ४१ ५५ ॥ अत्रायवृयसाकायदीकयासादय

यदुत्तमस्य अष्टकलनः ४ कुरु (वे कांथ वायका ४॥ ७७॥ तथा दवधुमकुशुबुल्ले काथ उच्यते । यथा देवं तथामर्कं यथा
 मर्कं तथा गुम् ४॥ ७८॥ तथा देवमर्कं गुम् ४॥ ७९॥ यजुतामहर्कं १ गुम् ४॥ यमसास्त्रं यजुतामहर्कं १ गुम् ४॥ सिद्धाकसा
 वधलाह्वी उहस्त्रिभयभक्त १ गुम् ४॥ यमसास्त्रं यजुतामहर्कं १ गुम् ४॥ क्रामियावर्ति १॥ ८०॥ अत्रिक्लितसदातुगुरुयथा गुम् ४॥
 त १॥ यो विलंछ्याह माचक्षुर्नाम यवस्त्रिभयभक्त १॥ ८१॥ आतिवर्धुर्गमीयाणी मर्कं ४॥ यथा ४॥ यिथ १॥ ह्यं विनास्त्रिभ
 दृष्टिमतश्चलत्तं विना ॥ ८२॥ विना वासंस्त्रिभयवायु ४॥ यथा ४॥ सगुम् ४॥ यिथ १॥ यत्तुं सर्वं विलिङ्गते तं यवान्नदसत्तुं
 ॥ ८३॥ गुरुत्वं विदितां तस्य ४॥ कलतायिक १॥ गुरुताया माकुरादोना कलतायिक ४॥ ८४॥ यथा ४॥ यिथ १॥
 सहिदधकया गुम् ४॥ यथा ४॥ कलतायिक १॥ गुरुताया माकुरादोना कलतायिक ४॥ ८५॥ यथा ४॥ यिथ १॥

यदंतिथाम् ४॥ कुरु ४॥ कलतायिक १॥ गुरुताया माकुरादोना कलतायिक ४॥ ८६॥ यथा ४॥ यिथ १॥
 यथा ४॥ कलतायिक १॥ गुरुताया माकुरादोना कलतायिक ४॥ ८७॥ यथा ४॥ यिथ १॥
 यथा ४॥ कलतायिक १॥ गुरुताया माकुरादोना कलतायिक ४॥ ८८॥ यथा ४॥ यिथ १॥
 यथा ४॥ कलतायिक १॥ गुरुताया माकुरादोना कलतायिक ४॥ ८९॥ यथा ४॥ यिथ १॥
 यथा ४॥ कलतायिक १॥ गुरुताया माकुरादोना कलतायिक ४॥ ९०॥ यथा ४॥ यिथ १॥
 यथा ४॥ कलतायिक १॥ गुरुताया माकुरादोना कलतायिक ४॥ ९१॥ यथा ४॥ यिथ १॥
 यथा ४॥ कलतायिक १॥ गुरुताया माकुरादोना कलतायिक ४॥ ९२॥ यथा ४॥ यिथ १॥
 यथा ४॥ कलतायिक १॥ गुरुताया माकुरादोना कलतायिक ४॥ ९३॥ यथा ४॥ यिथ १॥

श्री

यं तासु वृत्तं ३॥ यः सत्तु कदाचित् साकल्यं यच्छति ॥ १०२ ॥ दूरे रक्तं विजानीयात्तु र्ममावतावकं ॥ यः कदाचित्
 तस्मात्तु स्वनिष्ठाया ददाति हि ॥ १०३ ॥ गियाया सादिवहितं सगु वृद्धं लेख ॥ यः सद्यः यययक र्म सुलभं सा तस्मि
 खर्क ॥ १०४ ॥ कुताय धर्मादु न सगु वृद्धं विदुर्लेख ॥ दीया दीया कर्म विमं यथं यथा ॥ १०५ ॥ आदद्यात्तु वृद्धं
 तस्मात्सादिविवर्जितं ॥ क्वचित् सद्यः यथा रक्ति माहं दातु जायते ॥ १०६ ॥ तत्थ यद्वत्ता माहं दातु तदा दूरे रक्तं गु वृद्धं गु वृद्धं
 वरुवः सकि स्यात्तस्मात्तु यद्यं तु वि ॥ १०७ ॥ दूरे रक्तं यं गु वृद्धं विमृश्य वत्सर्वं दीयक ॥ गु वृद्धं वरुवः सकि वदन्ता को थया व
 ग ॥ १०८ ॥ दूरे रक्तं यं गु वृद्धं विमृश्य वत्सर्वं दीयक ॥ गु वृद्धं वरुवः सकि वदन्ता को थया व
 क मनुकु दूरे रक्तं गु वृद्धं वरुवः सकि वदन्ता को थया व
 क मनुकु दूरे रक्तं गु वृद्धं वरुवः सकि वदन्ता को थया व

६९

यथैव र्म यक्ता यमातदे विजायते ॥ १०९ ॥ गु वृद्धं रक्तं वरुवः सकि वदन्ता को थया व
 ११० ॥ तस्या लोके तस्मात्तु सगु वृद्धं लेख ॥ दीया दीया कर्म विमं यथं यथा ॥ १११ ॥ आदद्यात्तु वृद्धं
 गु वृद्धं विदुर्लेख ॥ ११२ ॥ यथा वदन्ति सती यस्मिन् वती र्दिलीयते ॥ तथैव यं विलीयते सदा वायं सती यते ॥ ११३ ॥ य
 थ दीया तले ॥ ११४ ॥ गु वृद्धं वरुवः सकि वदन्ता को थया व
 ११५ ॥ तथैव गु वृद्धं वरुवः सकि वदन्ता को थया व
 ११६ ॥ तथैव गु वृद्धं वरुवः सकि वदन्ता को थया व
 ११७ ॥ तथैव गु वृद्धं वरुवः सकि वदन्ता को थया व
 ११८ ॥ तथैव गु वृद्धं वरुवः सकि वदन्ता को थया व
 ११९ ॥ तथैव गु वृद्धं वरुवः सकि वदन्ता को थया व
 १२० ॥ तथैव गु वृद्धं वरुवः सकि वदन्ता को थया व

ॐ

64

गुप्तव ४ स्त ॥ ४॥ १३० ॥ यथेते कार्येष्टयास्य द्वावर्णवाधकारव ७ ॥ यष्टुलिखककरुष्टागुप्तस्येवयादुर्का ॥ १३१ ॥ यष्टुती
 यादुर्लभानिद्वययितसंगय ४ ॥ गुप्तलक्षणाथर्तसंगयकुदकावर्क ॥ १३२ ॥ लब्धाहानयदंथितगुप्तकवसावथ ७
 जूतरिष्टुगुप्तयास्यसंगयाकुदकावर्क ॥ १३३ ॥ लिख्यागुप्तकवर्गवागदाधवातुलियुते ॥ मधुलब्धाथथष्टुमय्याकुदका
 कवर्कव ७ ॥ १३४ ॥ हानलब्धसुधालिख्यागुप्तागुप्तकवर्कव ७ ॥ ४० तिर्तकथिर्तकिष्टुल्लदं गुप्तलिख्या ४ ॥ ससाधनकल
 नानिकिष्टुयष्टुगुप्तिकसि ॥ १३७ ॥ ० ॥ ४० तिर्तकलाष्टुवसकावर्कस्यगुप्तलिख्यालक्षणाकथर्तनामगुप्तादलोहाम
 ४ ॥ १३८ ॥ लब्ध ॥ ० ॥ ॥ लब्धगुप्ताव ॥ कलनलोहगुप्तिकानियविष्टागुप्तलिख्या ४ ॥ उयेदगुप्तर्तदीकाशदध्वदमयरा
 ॥ १ ॥ ॥ लब्धगुप्ताव ॥ लब्धगुप्तविष्टुवकानियसाधनविष्टुकसि ॥ तस्यलब्धसाधनविष्टुगुप्ति ४ ॥ यजायर्त ॥ २ ॥ विनादी

कर्म ४॥ २१ ॥ आकृष्टाकातितायाविथविवादनयानिहि ॥ २२ ॥ दृष्ट्याकथानीतिमुद्रासंविक्तथसदा ॥ २३ ॥ हीगुवस
 म्हायापिकीरुतदगनयिव ॥ वदतयविदययासाकातयवलेविथ ॥ २४ ॥ आनद्वर्कयेवासायसवतगदिविजिया ॥
 थवासाकृण्णयास्यदीदामसकावकर्मसु ॥ २५ ॥ निथ्याविबकलेभने ॥ दृष्ट्याहुवयवीदल ॥ आनद्वर्कयेवासायसवतगदिविजिया ॥
 नकासायनादिषु ॥ २६ ॥ कृतायदगमासथसकसिद्धिमयीध्वि ॥ थाधकवलीविह्वयनिथ्यादयात्रवायथ ॥ २७ ॥ आ
 दिसम्भवावसानयथाग्निकिनियातिता ॥ २८ ॥ अथमासयमासकानिथ्यादविद्यकीकिता ॥ २९ ॥ आधीरुकिरुथद्विदीह
 दार्थसवदन्तिथ ॥ यतद्विलुक्कदृष्टास ॥ अविथ्याग्न ॥ ३० ॥ विता ॥ ३१ ॥ दीदासमयसंयाकाहुतविह्वनवदिता ॥ ३२ ॥ रु
 दृष्टवीर्याथमयथाग्न ॥ ३३ ॥ रुकिविहीनयिसिद्धिमय ॥ रुकिमुवातवा ॥ अकयुदरुकि ॥ अयथाग्न

ही

८७

निथिथ ॥ ता ॥ ३४ ॥ कलावविद्याकाविद्यासकिसुत ॥ ३५ ॥ कलाकलादयर्थक्याकागसाकिवावधि ॥ ३६ ॥ लक्ष्मीताक
 लाहुयाकलायाकिविनीविता ॥ ३७ ॥ संहारकमथागतकलाकलाकनयिथ ॥ संधा ॥ ३८ ॥ संधासमयसमयविधिवका ॥ ३९ ॥ निवा
 वधि ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ काकालेनीतिदिवरावयुदायिनी ॥ अष्टनिगकलारिद्वयकेगकिवअविता ॥ ४२ ॥ गकन्यासक
 मलेवसृष्टिसंहारमास ॥ ४३ ॥ कृतागुवसुखाद्विनिधुसंथा ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ जायतद्वतालावाथानितीवीवसंगद ॥
 कलादीदासमद्विष्टायगुयासयकाविनी ॥ ४६ ॥ रुकगिदयुवथावाउयमूलाक्षिमालिनी ॥ ४७ ॥ दृष्ट्याहुवयवीदल ॥ आनद्वर्कयेवासायसवतगदिविजिया ॥
 नकासायनादिषु ॥ ४८ ॥ कृतायदगमासथसकसिद्धिमयीध्वि ॥ थाधकवलीविह्वयनिथ्यादयात्रवायथ ॥ ४९ ॥ आ
 दिसम्भवावसानयथाग्निकिनियातिता ॥ ५० ॥ अथमासयमासकानिथ्यादविद्यकीकिता ॥ ५१ ॥ आधीरुकिरुथद्विदीह
 दार्थसवदन्तिथ ॥ यतद्विलुक्कदृष्टास ॥ अविथ्याग्न ॥ ५२ ॥ विता ॥ ५३ ॥ दीदासमयसंयाकाहुतविह्वनवदिता ॥ ५४ ॥ रु
 दृष्टवीर्याथमयथाग्न ॥ ५५ ॥ रुकिविहीनयिसिद्धिमय ॥ रुकिमुवातवा ॥ अकयुदरुकि ॥ अयथाग्न

ली

अभास्यतादयि । सद्यः संजायत कुतः सादीक्षाणां कवीकृता ॥ ७० ॥ सभादीक्षाद्विधायां कारीवारीवृत्तयतिव । अथ
 नां विधिं दृष्ट्वा निष्पद्यते स भविष्यति ॥ ७१ ॥ कथं यदुवर्तनं कर्तव्यं यदुपमर्तनं । सज्जान्तादिह कथं तत्तु मृद्वनिस
 चिक ॥ ७२ ॥ गुणयदिह साधनं विधं कथं द्विचक ॥ ७३ ॥ यानां क ॥ ७४ ॥ द्विच ॥ यवातद्वमथाय ॥ ७५ ॥ सजातकि
 यदायां कारीवरीका कलं ध्वनि । यविनीवृत्तवायिगुणं सति स एत ॥ ७६ ॥ सत्यं धाधिर ॥ निष्पद्यते यानां सदा
 रुच ॥ ७७ ॥ वाक्कायायावतिमुक्ता रसीयगतिरुक्ता ॥ ७८ ॥ सजातदियराविसी सर्ववदतिनामवि । यदसि धधकालं
 तत्त्वयमवातुत्यम ॥ ७९ ॥ यदुदुमुतनक्रातिरसीयवकुमीध्वनि । यधविद्व ॥ निव ॥ सादातयुतकुमगावु ॥ ८० ॥
 ८१ ॥ ववागीवृत्तवादीक्षारुचधधविमीयिती । निवरावयदासादादीक्षासाकलनायिक ॥ ८२ ॥ ज्ञातव्येवकं यथे

८३

या ३

८३ ॥ गरीवस्य तसंकाशात जातं त्वेककर्म ॥ ८४ ॥ ज्ञातान ॥ कावयदीक्षा मनादिमलमुक्ति ॥ ८५ ॥ दीक्षाधृता ॥ कर्मसा
 मरितार्थयति यावका ॥ ८६ ॥ अरिसंधातद्वयताद्वनिकाकमनिष्पद्य ॥ ८७ ॥ सकोवधेयुथाकृत्या द्विचनकिं कलं ध्वनि ।
 यदुयां गतथा द्विधादीक्षां तलु विद्व ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ अस्माद्यवितताद्वन्यायवसंस्कृतवाधका ॥ ९० ॥ दीक्षायां मादययुद्धि
 र्वाधामतयययि ॥ ९१ ॥ उययातकलकागिसकायातककाटय ॥ ९२ ॥ दधनद्वरुतिधधनिदीक्षादिविधिना कता ॥ ९३ ॥ य
 र्थेवामीलितोत्ताता रुचकियनव ॥ ९४ ॥ सादीक्षेयुदितध विपुयागविमोचिती ॥ ९५ ॥ यथदीक्षितमागुजायन
 यययाध्वयि । सादीक्षां द्रुयाणां मुजलमयका ॥ ९६ ॥ उयामतागतायियावितातेव सिध्ति । गादीक्षासाधु
 यतागुणीगुवात्मले सिद्धय ॥ ९७ ॥ वसधुगयथा सिद्धमय ॥ ९८ ॥ दीक्षाविद्वसुथाक्राता निवर्तलरुचि

सिद्धि २

थ गाले २॥ दीक्षा मिद द्यु क मा सो साया विद्धि न वचन ४॥ गत ४ य मां हुत का र्छं ति र्वा ज मु नि वा र्ध ७॥ ले ९॥ गतं दू द स्य नू
 द र्बं विय स्या यि व वियुता ॥ दीक्षा मंका व मं य नं जा नि रु था त वि द्य नं गाले ४॥ नि व लि (मं) नि ला वृ द्धिं क र्त्त व्या या य मा प्रू या
 ७॥ दी क्षि त स्या यि यृ र्त्तं स्मृ त्वा त त्या य म नू नं गाले ७॥ दा र्ढ ण लो क नू द त जा नि लि प्र य नि छि रं ॥ य (था) य रं ग था गु द्वा ४
 स र्त्त व र्त्तु मु दी क्षि ता ४ गाले ७॥ थ न यू जि त मा रं ण या व द्ध उ व ना कि र्वा ॥ यू जि रं त त स र्त्त स्या दी क्षि ते त त रं ग य ४ गाले १॥
 दी क्षि त स्य त का र्थ स्या ल्प णि नि य रं र्त्त नं ४॥ त र्ती र्थ रं ग म त रं न य न्मा र्जी म य ल (ले) ४ गाले ८॥ म ल दी क्षा तु या क र्त्त न उ य
 यू जा दि का ४ क्रि या ४॥ त रू ल कि प्रि थ रं र्वा नी ला या गु य वी ज व ७ गाले ९॥ थ वि दी क्षा वि की त स्य त सि द्धि नं य स म ति ४॥ त
 स्मा स र्त्त य य नं त गु वृ ण मी क्षि ता र्थ ७॥ १००॥ दि जा वा दी क्षि त ४ य प्रो द र्थ ७॥ यू र्त्त दी क्षि त ४ दि ज ४ क ति ४ स र्त्त ४ वि

निष्कामनिष्ठयः ४॥१०१॥ गुणानि किमुता तां यथा रथं दृष्ट्वा दीक्षितः ४॥ गुणवत्कृतं तथैव आतावतायाः ४॥ कदाचन ॥ १०२॥
 गंधादीक्षिततां पृथुद्विस्वर्गं गुणं ४॥ तत्कमतां तं तं वयं दृष्ट्वा दीक्षितं सतां ॥ १०३॥ दत्तं तं वयं सत्तं वयं
 कुतः सतां ॥ दीक्षितं तं विधिना सत्तं तां यवः ४॥ यथः ॥ १०४॥ अथिवा सतयुः दृष्ट्वा यवः ४॥ सत्तं ॥ दीक्षितं
 कदाचन निष्ठयः सत्तं निष्ठुः लं रथः ॥ १०५॥ दृष्ट्वा सत्तं तां तां दृष्ट्वा विधिना यवः ४॥ दृष्ट्वा सत्तं
 लं विभायनं ॥ १०६॥ तत्कदाचन दृष्ट्वा यवः ४॥ दृष्ट्वा सत्तं तां तां दृष्ट्वा विधिना यवः ४॥ दृष्ट्वा सत्तं
 विधिना यवः ४॥ दृष्ट्वा सत्तं तां तां दृष्ट्वा विधिना यवः ४॥ दृष्ट्वा सत्तं तां तां दृष्ट्वा विधिना यवः ४॥
 दृष्ट्वा सत्तं तां तां दृष्ट्वा विधिना यवः ४॥ दृष्ट्वा सत्तं तां तां दृष्ट्वा विधिना यवः ४॥ दृष्ट्वा सत्तं तां तां दृष्ट्वा विधिना यवः ४॥

यविंतिमिमांशः ४४ यथैव ३४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

ली

२४

१०१३

यथैव ३४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

ली

धुर्यक ४१ ति सिंहालिनिना कृ ४२ रुतलीतातिवंगक ४३ ॥ ति वीजावमनामका वृ ४४ क्रिष्टा ४५ कीन क ४६ उतामियुव
दासीनालजिनामादिग ४७ यिथ ॥ १०२ ॥ यथैतामकुथायां धृथाहुवायुजययिथ ॥ सिद्धिनिजाय ॥ गत्यलककोटिजयादयि ॥
१०३ ॥ कथयैदगसंस्कारा मकुथावदुवा ४७ यिथ ॥ जननं जीवतं यथा काउतं धावतं तत ४१ ॥ १०४ ॥ अरिथकाथविमलीक
वसाययनं तत ४१ ॥ अर्चनं दीयतं युक्तिविरुक्तं कलनायिक ॥ १०५ ॥ सांख्योपनिषत्कावियथायुतिनिगतिवैधम
नुधृष्टजिनायाकिर्मकावेदगसिक्ता ॥ १०६ ॥ शैव्यैरुविर्थाकातिविहितानिरुल्लय ४१ मूलं सकुयथायनमृष्टाथ
तानि सकिर्ण ॥ १०७ ॥ यस्यानयातय ४१ ॥ कृ ४२ वृ ४३ धर्मसंवर्य ॥ अत्यदादुष्टयलस्यार्द्धककुष्टार्द्धतर्पणय ४१ ॥ १०८ ॥ गत्वा
सर्वययतंतयवान्वक्तुथसुधी ४१ ॥ यमध्वनलकालेयिकायकर्मसुमीध्वि ॥ १०९ ॥ डिक्कादस्ययमानंतकमोदलोय

२७

तिगहा ७१ मतादर्थयम कुरि ४२ कथं सिद्धिद्वानन ॥ ११० ॥ मताव्यगनिवाव्यगनकिमव्यगसावृ ४१ तसिद्धितिवमा
रुक्कल्यकाटिगतेवयि ॥ १११ ॥ योवार्थयधृतविद्यायमार्थवियनउय ४२ र्थावर्थदीयतदार्तकथं सिद्धिद्वानन ॥ ११२ ॥
धनार्थमस्यतरीर्थउंरार्थवियनगय ४१ काव्यार्थवतायागा कथं सिद्धिद्वानन ॥ ११३ ॥ अतिथनपुथरुतन्यासंयथा
वृत्तं जय ॥ ११४ ॥ कर्मकृत्विथमृडा ४२ सर्वरुवगिति कूल ॥ ११५ ॥ विष्णुगसमर्णकारियु ४१ कर्मकथानिय ४१ गथावृतादिक
सर्वमयविर्गुंरुथयिथ ॥ ११६ ॥ सतितांगावमं कं नमुखकोमं स्यमंयुत ४१ थाउथरुं उलायागुथवतातिइगुसिर्त ॥ ११७ ॥
अलस्य ४१ कूलं तिर्दा कृतं तिष्ठीवतं रुय ॥ ११८ ॥ नीयान्मृ ४१ वर्यकायं जयकालं विवक्तुथ ७ ॥ ११९ ॥ अत्याहाव ४२ ययोमंयुय
उत्थातिवसाग ४१ जनसंगं वलीयं ववहिर्मेकं तसिद्धि ॥ १२० ॥ उक्तीर्णं ययुकीतलो मूककोलो गलावृ ४१ अ

६१

नात्मादादिर्जरयं ॥ ३१ ॥ जगन्निष्ठाधिष्ठितं यद्युगयोगसमन्वितं ॥ जीवद्वयगतं सार्ग्यं च जितं सर्वमानवे ॥ ३२ ॥ अ
 स्मिन्वृक्षे न लभ्यते कविना तन्मूलं रथं ॥ विमथा जायते साक्षात्तान्त्रिकाया विद्यावत् ॥ ३३ ॥ कथा नादादिभागेनूतयति
 नमिषिकथं ॥ मूलान्नवदण्डकिं मृगं कुरुदि संरुध ॥ ३४ ॥ तल्लक्षणं मृगं निवृत्तं वदितुं न ज्ञेयं ॥ सहीभा
 मृजानं मृगं वदितुं विविक्तं ॥ ३५ ॥ तल्लक्षणं कानि साया निभागे ॥ सर्वं तं संपद्य ॥ दण्डिथ मृगं आश्रयं रुदिदि
 यमोदुर्वं ॥ ३६ ॥ यगर्वी जंमं वरुणं तल्लक्षणं रुदि ॥ सदा धृष्टिं कथं मृद्वि सरुध दज्जं मव ॥ ३७ ॥ सर्वं भागेनू
 रुर्वं विद्यायां यदयं विथ ॥ अस्माद्यवतं वंश्चार्तं तां नि सत्यं तं संपद्य ॥ ३८ ॥ सा विदंश्चार्तं जं विरुलं मरुददीविर्गं
 लानि कस्मादि सवसि विधितं तं तमाधय ॥ ३९ ॥ द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं ॥ वीजं सविकथं यमुसरु

१०१

४० ॥ अस्माद्यवतं वंश्चार्तं तां नि सत्यं तं संपद्य ॥ तामसंश्चार्तं जं विरुलं मरुददीविर्गं ॥ ४१ ॥ द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं
 तमाधय ॥ ४२ ॥ द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं ॥ तामसंश्चार्तं जं विरुलं मरुददीविर्गं ॥ ४३ ॥ द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं
 द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं ॥ तामसंश्चार्तं जं विरुलं मरुददीविर्गं ॥ ४४ ॥ द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं
 द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं ॥ तामसंश्चार्तं जं विरुलं मरुददीविर्गं ॥ ४५ ॥ द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं
 द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं ॥ तामसंश्चार्तं जं विरुलं मरुददीविर्गं ॥ ४६ ॥ द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं
 द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं ॥ तामसंश्चार्तं जं विरुलं मरुददीविर्गं ॥ ४७ ॥ द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं
 द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं ॥ तामसंश्चार्तं जं विरुलं मरुददीविर्गं ॥ ४८ ॥ द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं
 द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं ॥ तामसंश्चार्तं जं विरुलं मरुददीविर्गं ॥ ४९ ॥ द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं
 द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं ॥ तामसंश्चार्तं जं विरुलं मरुददीविर्गं ॥ ५० ॥ द्वादशभागेन यथा मृदा दण्डं सवसं यतं

ली

अनन्तनागसंगय ४॥ अतस्तस्यैवातिष्ठविद्यास्तुतं लक्ष्येथ ॥ १७६ ॥ कदम्बा (होत) कृत्युनागसमधू कडे ४॥ अथ क
 दययातासंयाटलही कयिकडे ४॥ १७७ ॥ सालनी मलिका जगिदयुका नृदयं कडे ४॥ कला नृदयं दावजाति कृत उजय
 दिरि ४॥ १७८ ॥ सतालिक नवकदली दादं कृष्टयुके नयि ॥ वदनाग नृकयु नथावना कृत तादिरि ४॥ १७९ ॥ नृकयु नयि ४॥
 रुदये ४॥ सनित्यगुरु लार्कवे ४॥ मृष्टवक्रुयाद्विविधिव नक्तविरुम ४॥ १८० ॥ महीयनी ध्रुव नृकात काताथी वतगवि
 ता ४॥ सिंहात्मरुग जोद्या सय्यदेष्टु मृष्टतयि ॥ १८१ ॥ सिद्धय वासनाय कगध्वं वतिनयि ॥ ध्वानयि कृतं सतिव
 यनागसंगय ४॥ १८२ ॥ वाडी लवहा मंत मियसा कययुर्व ॥ विधिनातनदधनि सोरा मृष्टतलं लक्ष ॥ १८३ ॥ यी
 तदये रुद्रिद्वि ४॥ सनित्यगुरु लार्कवे ४॥ रुद्रयायुर्व वनकी धवता क्षाततय ४॥ १८४ ॥ वाक्का धगतिद्वि तातदीय रु

१०३

वियुतयिथ ॥ तातादृष्टमृष्टा द्विविक्तयथागसंगय ४॥ १८५ ॥ निम्बका नृकयु नक्त क कटी विषयद्विरि ४॥ अ
 धेयै नृकयु नक्त ४॥ १८६ ॥ कटडे ४॥ कृष्टव (होत) सनित्यगुरु लार्कवे ४॥ मृष्टयु मयि तां गविक द्वि विव ॥ अतं ॥ १८७ ॥
 उक्तक वसमं लिंक यिष्टा मयु मयि ४॥ साध्याय नृकयु विता रुसं समवि ४॥ १८८ ॥ साध्यायि कृति कृत्याय कांत
 कृष्टव जा ॥ सयुयुति विवता नृकयु यवि लं वय ॥ १८९ ॥ स्वतं नृकयु निता नृकयु साध्याय विधि ४॥ मली सतम
 तसा उगृष्ट विवमेव ४॥ १९० ॥ वितात लं विवत नृकयु का कृष्टमयि ॥ तं दये कृष्टयाद्विविधिव नक्त विरुम ४॥ १९१ ॥
 कृष्टाद्विद्वय (होत) सावनादि तसं ॥ मयि साध्यायि कृष्टमयि विवत वरु विविक्तय ॥ १९२ ॥ आत्मवर्कायु मा कृष्टा यथा
 कृष्टा विवता ॥ यथायथा कृष्टमयि ॥ मयि कृष्टमयि ४॥ १९३ ॥ तस्माद्वि विवत वरु नृकयु नृकयु नृकयु नृकयु नृकयु नृकयु

दी

निर्द्वीगतायथावीनवदिन ॥११७॥ लिखिकावकाहमखवमहीयुनं ॥ मूलमकुलिखनमस्यसाधनामसमचि
तं ॥११८॥ वकाहमखवकाहमनिविलिखयवेमध्वि ॥ कसवमखवमातखेवमोचगुमयायति ॥११९॥ वृष्टवववकाह
खालिखनमकुमचिक ॥ यथैववुवकाहिरुगुरुद्विमनाहम ॥१२०॥ तवयनमसालिखविधिवमकुविकम८५५क
प्रियमवमववुवलगतकयथयिथ ॥१२०॥ मध्यादिववुवमाकदाविनतिवरातकुमात ॥ अथवावववववनिदग
वामयवयिथ ॥१२१॥ ववुवमाववुवथेवववकयसाधकनकिन ८५५ अस्मिन्नतिनिवोतपुमनांसवधिवजल ॥१२२॥ व
मदेकुलिखाकुर्वताविकलकुलनिव ८५५ मनुयाहमसायकयडकुललनधवता ॥१२३॥ साधविमूर्तिवमविमात
वावेववविता ८५५ विदिकुगुवविधनदमकिगयतीतयिथ ॥१२४॥ कललवमसमयवविधिवमकुविकम८५५ अरि

१०४

विथयिथानिथीसर्वपाययनकथ ॥१२५॥ आयुंलीकानिमीरायविद्यावाग्म्यदिकंरुथ ७५५ वाजालिखिकालरुनयवु८
सागवममही ॥१२६॥ अविथीमारिविकमुमरुदधयसायुया ७५५ वधारिविकालरुनयुगंसर्वगुधमचिर्त ॥१२७॥
रुगायमयुवागमयावितन्यकितसंगय ८५५ विलारुवायिरुडुवालिखियायनमूलम ॥१२८॥ विधुगंवाकनाधविसव
वकाकवमरुथ ७५५ आयुवाग्म्यमेधयविद्यालोरुयनाडय ॥१२९॥ यथवमनतसारीरुसर्वसाधायसंगय ८५५ य
दयवयसुंरुयदिथीजतयादका ८५५ अलिमाधुसिध्यादिसरावसवसायन ५५५ वथागयुटिगीयमुरवाविलमि
द्वय ८५॥१३१॥ यवासायमकुडुदधनतागसंगय ८५५ वकनागविसुकेतविमूलकवमलि ८५॥१३२॥ अतनमकुव
जतनासाधविद्यनकयि ७५५ उधुमथेकनिहोनयवासायमकुवि ७५॥१३३॥ कलाधुवाधनवधुजीवनमक ८५५ कलध

द्वियसंद्यातंसतसामंतिवृक्ष ॥ स्वात्मयस्त्रिदशवर्षावितर्तव्यात्समृद्ध ॥ ७० ॥ सुदं कृत्वेनिक्रवातांमतांसिदावयनिय ॥
 तस्मान्मेडांतिस्त्रिदशवर्षावितर्तव्यात्समृद्ध ॥ ७१ ॥ अतकुरुलदाताद्वययितालोषकलम्बा ॥ माहवात्मगयालासका
 बलदकमालिका ॥ ७२ ॥ यमदूतादिसंवेष्टारुथयामिसकृन्वि ॥ गायनसमर्तव्येवतस्माद्यत्तुमितीति ॥ ७३ ॥ आत्म
 पुद्गियवताद्वसर्वभागतिवावर्षा ॥ तवसिद्धिद्वारुत्वादासर्तकथितंयिथ ॥ ७४ ॥ आगुगुदक्षिभूयवाद्वागुदेवयिथा ॥ ७५ ॥
 दयि ॥ मकभादयिथा ॥ धयमाभावनंविद्वेषा ॥ ७६ ॥ महीलयाद्वगकिवाद्यामितीगदसंयथा ॥ तल्लिगवाद्द
 वलिसंयुक्तंयविकीर्ति ॥ ७७ ॥ कमलासतेभूयवात्तुयुगवादिनागता ॥ नमिगवावयायद्वकृत्तं ॥ ७८ ॥ कीर्ति ॥ ७९ ॥
 ॥ ७९ ॥ यमद्विभूयविस्त्रवादिदुष्ककलागया ॥ यमिगद ॥ ताद्विद्यारुमिथरिधीयत ॥ ८० ॥ सुखिताययुगमता

द्वतमृष्टविद्वन्ता ॥ अतकुरुलदाताद्वययितालोषकलम्बा ॥ माहवात्मगयालासका
 बलदकमालिका ॥ ७२ ॥ यमदूतादिसंवेष्टारुथयामिसकृन्वि ॥ गायनसमर्तव्येवतस्माद्यत्तुमितीति ॥ ७३ ॥ आत्म
 पुद्गियवताद्वसर्वभागतिवावर्षा ॥ तवसिद्धिद्वारुत्वादासर्तकथितंयिथ ॥ ७४ ॥ आगुगुदक्षिभूयवाद्वागुदेवयिथा ॥ ७५ ॥
 दयि ॥ मकभादयिथा ॥ धयमाभावनंविद्वेषा ॥ ७६ ॥ महीलयाद्वगकिवाद्यामितीगदसंयथा ॥ तल्लिगवाद्द
 वलिसंयुक्तंयविकीर्ति ॥ ७७ ॥ कमलासतेभूयवात्तुयुगवादिनागता ॥ नमिगवावयायद्वकृत्तं ॥ ७८ ॥ कीर्ति ॥ ७९ ॥
 ॥ ७९ ॥ यमद्विभूयविस्त्रवादिदुष्ककलागया ॥ यमिगद ॥ ताद्विद्यारुमिथरिधीयत ॥ ८० ॥ सुखिताययुगमता

८

यदाताङ्गर्ध्वं यत्तिथीयते ॥ ७८ ॥ अमलवाक्कुलं नित्यं विना लवकलया ॥ तादात्म्यं कर्मणा चैव अङ्गनाय विधी-
 र्तिना ॥ ७९ ॥ यत्तु सर्वं दत्ताद्यायि यो यो विना न भव्यं कलाथ यदाताङ्गर्ध्वं नित्यं रिधीयते ॥ ८० ॥ धृता लवमलाया
 मयुगिगन्धयुक्तं न भव्यं न भव्यं मादुतनाङ्गर्ध्वं यत्तिथीयते ॥ ८१ ॥ दीयन्तु न मलाया नार्कं कामयन्ति सङ्गता ॥ यमन
 त्वयका लवदीयं यत्तिथीयते ॥ ८२ ॥ मादुधं कर्मणा मताद्व्याय किति वा मला ॥ दिग्वृत्तयुदाताङ्गर्ध्वं यमन त्वयका
 मता ॥ ८३ ॥ मादुदीयं तिथ्यातामादुधं कर्मणा मताद्व्याय किति वा मला ॥ दिग्वृत्तयुदाताङ्गर्ध्वं यमन त्वयका
 वरुकिर्नैव द्यं न द्यदीयते ॥ वदुका न विवदुकी ययी निका मला ॥ ८४ ॥ लियया यमन मताद्व्याय किति वा मला
 न भव्यं न भव्यं विदुद्विद्या यमना मताद्व्याय किति वा मला ॥ ८५ ॥ त्वयका न द्यदीयते ॥ वदुका न विवदुकी ययी निका मला

१००

कृतवत्तता ॥ ८६ ॥ कल्याणं धर्मं मूलं वाङ्मूलं कथितं यिथ ॥ यका मताद्व्याय किति वा मला ॥ ८७ ॥ यमन त्वयका
 वकवमत्यामादुधं तिथीयते ॥ उमती कर्मणा मताद्व्याय किति वा मला ॥ ८८ ॥ मला न भव्यं न भव्यं मादुतनाङ्गर्ध्वं यत्तिथीयते
 अदिमत्या कर्मणा न भव्यं तिथीयते ॥ ८९ ॥ यमन त्वयका मताद्व्याय किति वा मला ॥ ९० ॥ यमन त्वयका मताद्व्याय किति वा मला
 वा मला ॥ ९१ ॥ यावता लवमला नित्या न नित्यं रिधीयते ॥ लीकै वल्युदाताङ्गर्ध्वं यमन त्वयका मताद्व्याय किति वा मला ॥ ९२ ॥ कृतवत्तता
 खित्वा कुदीयं तिथीयते ॥ रुदयुधं यमन मताद्व्याय किति वा मला ॥ ९३ ॥ रुदयुधं कर्मणा मताद्व्याय किति वा मला
 म मताद्व्याय किति वा मला ॥ ९४ ॥ मनीयं वा विविदुका यि विविदि कथ्यते ॥ ययी निका मला मताद्व्याय किति वा मला
 न भव्यं ॥ ९५ ॥ यमन त्वयका मताद्व्याय किति वा मला ॥ ९६ ॥ रुदयुधं कर्मणा मताद्व्याय किति वा मला ॥ ९७ ॥ विविदि कथ्यते

६।

हंथा कस्य वा नः तिथिथ ॥ मय्युद्यमावृत्तिं वंथा ॥ नो न्यवा न के ॥ ४॥ ५॥ स्वस्त्युवर्गं य क मूद्रासनमितिथिथ ॥ ६॥
वयु जायसा दानमावाह तमितिस्मृतं ॥ ७॥ ८॥ आसनं सति धनं गच्छा कृत्यतं कृतं तापिक ॥ ९॥ १०॥ यमसूची कावसनिधित
मूदीति ॥ ११॥ १२॥ यग कृपाय कर्तुं सति प्राधत मय्युत ॥ १३॥ १४॥ यवतां गय उद्भादिया मय्युत ॥ १५॥ १६॥ आकृतं स मय्युत
॥ १७॥ १८॥ यमवृत्तं न मीधुवी ॥ १९॥ २०॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ २१॥ २२॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ २३॥ २४॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ २५॥ २६॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ २७॥ २८॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ २९॥ ३०॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ३१॥ ३२॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ३३॥ ३४॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ३५॥ ३६॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ३७॥ ३८॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ३९॥ ४०॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ४१॥ ४२॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ४३॥ ४४॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ४५॥ ४६॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ४७॥ ४८॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ४९॥ ५०॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ५१॥ ५२॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ५३॥ ५४॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ५५॥ ५६॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ५७॥ ५८॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ५९॥ ६०॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ६१॥ ६२॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ६३॥ ६४॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ६५॥ ६६॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ६७॥ ६८॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ६९॥ ७०॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ७१॥ ७२॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ७३॥ ७४॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ७५॥ ७६॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ७७॥ ७८॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ७९॥ ८०॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ८१॥ ८२॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ८३॥ ८४॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ८५॥ ८६॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ८७॥ ८८॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ८९॥ ९०॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ९१॥ ९२॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ९३॥ ९४॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ९५॥ ९६॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ९७॥ ९८॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥ ९९॥ १००॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥

११०

ति०

अथ अंतिमं विद्यातमुवदतं कथितं तिथि ॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥ यमवृत्तं न मय्युत ॥

[illegible]

आध्यात्मिक कार्य

1.468

ASHA ARCHIVES